मृणाल पाण्डे

राजा चाँद पर

एक था राजा। नाम था चतुरसिंह। एक रात मौसम सुहावना था। ठण्डी हवा चल रही थी। चतुरसिंह महल की छत पर टहल रहा था। पूर्णिमा का चाँद आकाश में चाँदी के थाल-सा उगा। चारों ओर चाँदनी छिटक गई। राजा के मुँह से निकला, "वाह, कितना सुन्दर...।" फिर उसने सोचा – चाँद पर अगर अपना भी एक महल हो, तो कितना अच्छा हो! वहाँ बैठकर मज़े से धरती का नजारा देखा करूँगा।

बस, फिर क्या था! उस पूरी रात राजा तरह-तरह के कुलाबे भिड़ाता रहा। अगर चाँद पर जाएगा, तो अकेला तो जाने से रहा। अपने साथ रानी, बाल-बच्चे, रसोइए, मशालची, घोड़ा, पालकी सब कुछ तो ले जाना होगा। इन सबसे पहले महल बनाने के लिए ईंट, गारा और पत्थर चाँद पर पहुँचाने होंगे। चुने हुए कारीगरों को भी फौरन भेजना पड़ेगा। यही सब सोचते हुए पूरी रात बीत गई।

अगली सुबह चतुरसिंह सबसे पहले तैयार होकर दरबार में जा पहुँचा। उस दिन जो दरबारी आता, राजा को पहले से वहाँ बैठा देखकर चकरा जाता। कहाँ तो ज़रूरी कामों पर फैसलों के लिए उन्हें घण्टों राजा की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी और कहाँ आज यहाँ सबसे पहले उसके दर्शन हो गए।

जब पूरा दरबार लग गया, तो चतुरसिंह ने अपने सारे मंत्रियों, दरबारियों से कहा, "हम स्वयं चाँद पर जाना और वहाँ महल बनाना चाहते हैं, ताकि दुनिया को मालूम हो कि किसी भी राजा का पहली बार चाँद पर महल बना है। लेकिन हम बस, यह समझ नहीं पा रहे हैं कि वहाँ जाएँ कैसे?"

चतुरसिंह के दरबारी भी उसी जैसे थे। उन्होंने तुरन्त बेसिर-पैर की सलाहों की झड़ी लगा दी। सबकी इच्छा बस यही थी कि महाराज खुश हो जाएँ। किसी ने नहीं कहा कि ऐसा करना असम्भव है। एक ने कहा, "महाराज, बहुत आसान है, चाँद पर जाना। किसी भी तेज़ उड़ने वाले पक्षी की पीठ पर बैठकर चले जाएँ। पक्षी आपकी चरण-धूलि पाकर धन्य हो जाएगा।"

दूसरा बोला, "बिल्कुल ठीक है महाराज, हर तरह के पक्षियों की इसमें मदद ली जा सकती है। क्यों न ऐसा किया जाए कि कई पक्षियों को एक लम्बी रस्सी बाँधकर उड़ाया जाए। फिर रस्सी का दूसरा सिरा, गैस के गुब्बारे की तरह पकड़कर उड़ लिया जाए।" ऐसी ही बहुत-सी सलाहें दी गईं।

चतुरसिंह सबकी बातें ध्यान से सुन रहा था। बोला, "मान लो, उड़ते-उड़ते मेरे हाथ थक गए या मैंने नीचे देखा और गिरने का डर लगा तो....?" यह सुनकर चतुरसिंह के एक

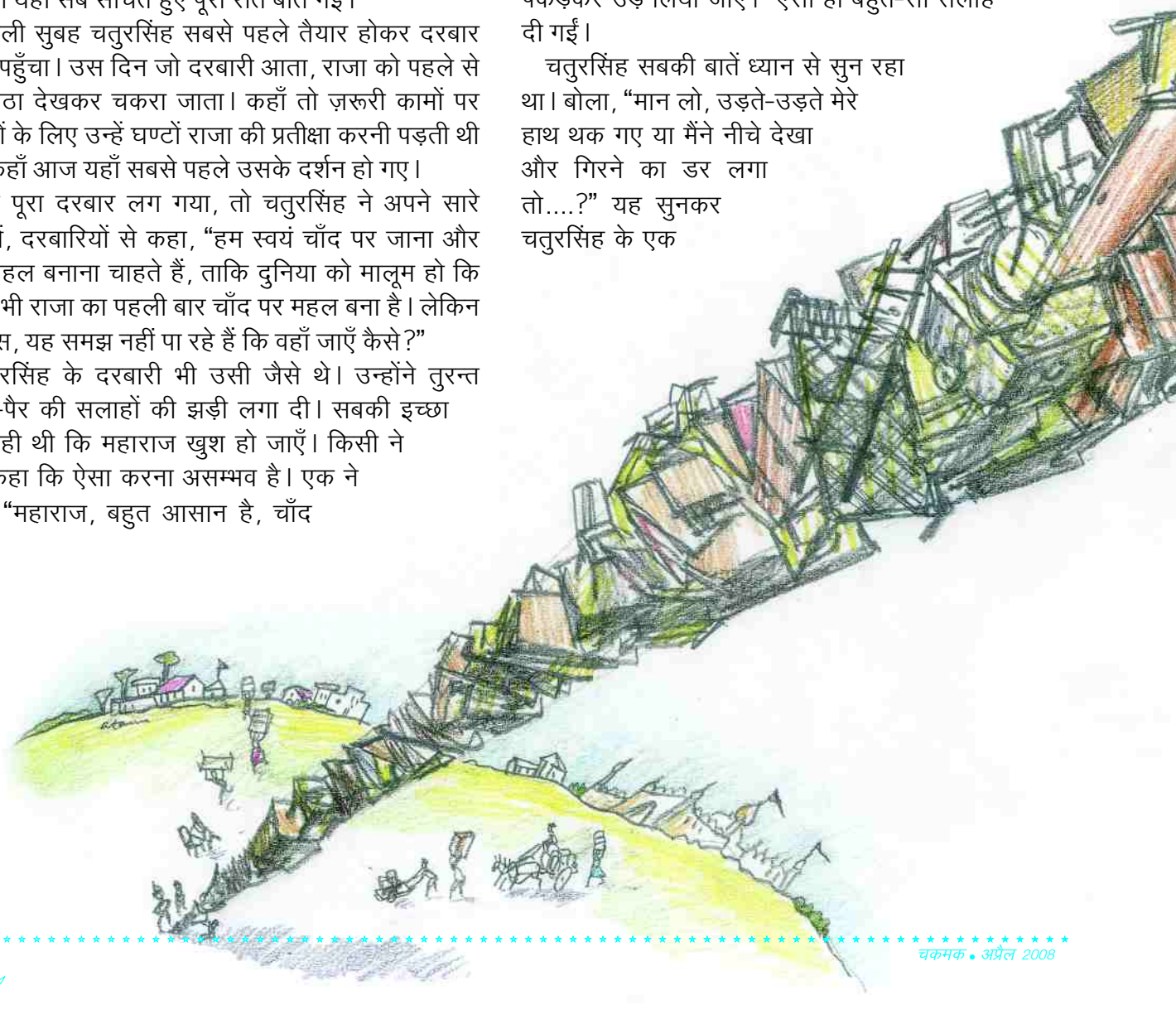

सलाहकार ने कहा, "लम्बी सीढ़ी बनवा लीजिए। जब मन किया तो सीढ़ी लगवाई और चाँद पर चले गए। फिर जब मन किया, वापस पृथ्वी वाले महल में आ गए।"

अब समस्या थी कि इतनी लम्बी सीढ़ी कैसे बनेगी? चतुरसिंह कई दिन तक उपाए सोचता रहा। दरबारियों की बन आई। लम्बी-लम्बी बैठकें लगतीं, जिनमें खूब खाना-पीना होता। हँसी-मज़ाक भी चलता।

फिर एक दिन नगर के लोगों ने ढोल वाले की आवाज़ सुनी, "सुनो, सुनो...! आदमी, औरत, बच्चे-बूढ़े, सब सुनें। हमारे महाराज चाँद पर जाना चाहते हैं। इसके लिए उन्हें लम्बी सीढ़ी बनवानी है। इसलिए सब लोग अपने घरों की मेज़ें, बक्से, चारपाइयाँ आदि महल के सामने जमा कर दें। आज के बाद जिसके भी घर में इनमें से कोई भी चीज़ पाई जाएगी, उसे देश निकाला दे दिया जाएगा।"

जिसने भी यह सुना, हक्का-बक्का रह गया। पर राजा का हुक्म! थोड़ी ही देर में राजमहल की तरफ जाने वाली सड़क पर भीड़ दिखाई देने लगी। उनमें से किसी के सिर पर कई-कई बक्से रखे थे, तो कोई चारपाइयाँ लेकर जा रहा था। महल के दरवाज़े पर बहुत से मज़दूर जमा थे। वे एक के ऊपर एक चीज़ें करीने से रखते जा रहे थे और सीढ़ी काफी ऊँची होती जा रही थी।

महल के झरोखे से चतुरसिंह यह सब देख रहा था। अन्ततः वह दरवाज़े पर आया। उसने मज़दूरों को हुक्म दिया, "रुक जाओ, पहले हमें चढ़कर देखने दो कि सीढ़ी चाँद से कितनी दूर रह गई है?"

मज़दूरों ने राजा की कड़क आवाज़ सुनी, तो डरकर एक और हट गए। चतुरसिंह ने एक कदम बढ़ाया कि सीढ़ी हिली, ढचर-ढचर। उसे डर लगा लेकिन फिर भी वह आगे बढ़ने लगा। उधर नीचे खड़े लोगों को लगा कि राजा अब गिरा कि तब गिरा। चतुरसिंह सीढ़ियाँ चढ़ता ऊपर जा पहुँचा। जो चाँद नीचे से बिल्कुल सीढ़ियों के पास नज़र आ रहा था, वह तो अब भी उतना ही दूर था। यह देख राजा का पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। चाँद की इतनी हिम्मत!

वहीं से चिल्लाया, "मैं इतनी कोशिश करके यहाँ तक आ पाया हूँ। यहाँ आकर देख रहा हूँ कि सीढ़ी तो चाँद से उतनी ही दूर है, जितनी पहले थी। या तो इसे ऊँचा करो, वरना एक-एक को सज़ा मिलेगी।"

चाँद तो ज्यों का त्यों आसमान में हँसता रहा। पर नीचे

खड़े लोग बेचारे डरकर काँपने लगे। सीढ़ी को ऊँचा करना कोई हँसी-खेल नहीं था। नगर की सारी चारपाइयाँ, बक्से, मेज़ें तो इस नामुराद सीढ़ी में लग ही चुकी थीं। कुछ भी नहीं बचा था। अब क्या करें?

तभी एक मंत्री बोला, "अरे, मैं बताता हूँ। महाराज की सीढ़ी में नीचे से निकाल-निकालकर बक्से और चारपाइयाँ ऊपर लगाते जाओ। सीढ़ी अपने आप ऊँची होती चली जाएगी।"

मंत्री की बात सुनकर प्रजा जनों और कारीगरों ने कुछ कहना भी चाहा, मगर उनकी कौन सुने! कारीगर चुपचाप आगे बढ़े। पर जैसे ही सीढ़ी के नीचे से पहला बक्सा निकाला गया, सीढ़ी डगमग हुई और राजा साहब चरखी बने औंधे मुँह नीचे गिरने लगे। अचानक गिरते-गिरते वे न जाने कहाँ अन्तरिक्ष में गायब हो गए। कोई कहता, उन्हें चील ले गई। कोई कहता, ब्लैक होल नाम के तारे ने निगल लिया उन्हें! बहरहाल वे मिले नहीं।

कहने वाले तो यह भी कहते हैं कि यह नेक सलाह देने वाला वह मंत्री परम चतुर आदमी था, जो झक्की राजा की, लोगों को सताने वाली आदतों से कुढ़ा बैठा था। उसने मूर्ख राजा की सनक से प्रजा और दरबारियों को हमेशा के लिए छुटकारा ज़रूर दिला दिया। अब उसे तुम मूर्ख कहो या कहो चतुर, क्या फर्क पड़ता है। चकमक

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बन्ध में जानकारी

प्रकाशन का स्थान	:	भोपाल	सम्पादक का नाम	: सुशील शुक्ल
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक	राष्ट्रीयता	: भारतीय
प्रकाशक का नाम	:	सी. एन. सुब्रह्मण्यम्	पता	: एकलव्य ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कालोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016
राष्ट्रीयता	:	भारतीय		
पता	:	एकलव्य ई-10 शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016		
मुद्रक का नाम	:	सी. एन. सुब्रह्मण्यम्	उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	: रैक्स डी. रोज़ारियो : भारतीय : एकलव्य ई-10 शंकर नगर बी.डी.ए. कालोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016
राष्ट्रीयता	:	भारतीय		
पता	:	एकलव्य ई-10 शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर भोपाल 462 016		

मैं सी. एन. सुब्रह्मण्यम् यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(प्रकाशक के हस्ताक्षर)
सी. एन. सुब्रह्मण्यम्